Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 22/September/2025 **IJRAW:** 2025; 4(11):34-36 **Accepted:** 01/November/2025

अंत्येष्टि क्रियाओं से उत्पन्न पर्यावरणीय चुनौतियाँ

[*1]डॉ. निशा राज़दान

[*1]शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, विद्या भवन रुरल इंस्टिट्यूट, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

यह शोध पत्र हिन्दू धर्म के अंत्येष्टि संस्कार से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित है। हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार जब भी दाह संस्कार किया जाता है तो वो पूरे आदर और सम्मान के साथ किया जाता है। इसी से सभ्यता व असभ्यता का बोध होता है। अलग-अलग शोधकर्ताओं द्वारा हिन्दुओं के दाह संस्कार से पर्यावरण पर पड़ने वाले शोध किए गए है। कुछ तर्क उक्त शोध का समर्थन करते है तथा कुछ विपक्ष में होते है। प्रस्तुत शोध पत्र में मूल्य मूक्त रहते हुए तथ्यों को प्रकट किया गया है। वाराणसी में गंगा की सफाई की परियोजना इस दिशा में एक नई शुरुआत है जिसमें उचित तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। भारत की इस सांस्कृतिक विरासत को प्रदूषण से बचाने की बहुत ही जरूरत है। दाह संस्कार के लिए 500 किलोग्राम और उससे अधिक लकड़ी की आवश्यकता होती है। लकड़ी की यह आवश्यकता वनों के क्षरण से आती है और परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण होता है, जबकि लकड़ी जलाने से वातावरण में ग्रीनहाउस गैसें उत्सर्जित होती हैं। दाह संस्कार के बाद नदी के पानी में राख के प्रवाह के कारण जल प्रदूषण भी होता है। शवदाह के क्षेत्र में विद्युत शवदाहगृह, गैसीफायर शवदाहगृह, सौर शवदाहगृह आदि जैसे विकास हुए हैं। ये समाधान भारत में इतने लोकप्रिय नहीं हैं क्योंकि यह विकल्प मुखाग्नि और कपालक्रिया जैसे अनुष्ठानों के अवसर प्रदान नहीं करते हैं। हिन्दुओं के अंत्येष्टि संस्कार को पर्यावरण संगत बनाने हेतु धार्मिक शिक्षकों, महंत तथा कर्मकाण्ड करने वाले पंडितों का विधिवत प्रशिक्षण करवा सकते है। हिन्दू धर्म के अंत्येष्टि संस्कार से पर्यावरण प्रदूषण होने के वैज्ञानिक तथ्यों को सहजता से स्पष्ट करने की आवश्यकता है। नई पीढ़ी का समाजीकरण परम्परागत विधि के साथ-साथ वैज्ञानिक और पर्यावरण संरक्षण की विधियों से कर सकते है।

मुख्य शब्द: हिन्दू धर्म, अंत्येष्टि संस्कार, पर्यावरण प्रदूषण, शवदाहगृह, पर्यावरण संरक्षण आदि।

प्रस्तावना

यह शोध पत्र हिन्दू धर्म के अंत्येष्टि संस्कार से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित है। हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार जब भी दाह संस्कार किया जाता है तो वो पूरे आदर और सम्मान के साथ किया जाता है। इसी से सभ्यता व असभ्यता का बोध होता है। श्मशान तक पूरे अनुशासन का पालन किया जाता है। शास्त्रों के अनुसार जब शरीर को अग्नि दी जाए तब वैदिक या फिर पौराणिक मान्यताओं का पालन अवश्य करना चाहिए। धर्मग्रंथों के अनुसार वेदी में जब आधी लकड़ियाँ लगा दी जाती है तो मृतक के शव को उस वेदी पर लिटा दिया जाता है। मृतक का सिर दक्षिण दिशा में और पैर उत्तर दिशा में रखा जाता है। एक दीपक प्रज्वलित करके एक चम्मच में कपूर को उस दीपक से जलाकर वेदी के चारों ओर से अग्नि प्रविष्ट करवाते है। कुछ स्थानों पर घर से ही अग्नि ले जाने का नियम होता है ऐसे में उस अग्नि के द्वारा वेदी में अग्नि प्रविष्ट करवाना शास्त्रसम्मत माना गया है। अलग-अलग शोधकर्ताओं द्वारा हिन्दुओं के दाह संस्कार से पर्यावरण पर पड़ने वाले शोध किए गए है। कुछ तर्क उक्त शोध का समर्थन करते है तथा कुछ विपक्ष में होते है। प्रस्तुत शोध पत्र में मूल्य मूक्त रहते हुए तथ्यों को प्रकट किया गया है।

सम्बन्धित साहित्यों का अध्ययन

सायंतनी बसाक, अन्वेषा सरकार, रंजीता घोष, अद्रिजा चैधरी (2015) के इंटरनेशन जर्नल आफ ह्युमेनिटीज एण्ड सोशल सांइसेज में प्रकाशित शोध पत्र 'घाट्स आफ वाराणसी-एन इमर्जिंग सेंटर आफ पाल्युशन' के अनुसार भारत का पवित्र शहर वाराणसी स्थानीय लोगों के बीच काशी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है। हिंदू धर्म में यह माना जाता है कि जिन हिंदुओं का अंतिम संस्कार वाराणसी में किया जाता है, उन्हें तुरंत स्वर्ग का द्वार मिल जाता है। वाराणसी में घाट पूजा करने के सबसे प्रमुख स्थान हैं। यह विशेष रूप से दाह संस्कार स्थलों के लिए उपयोग किए जाते हैं (हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार)। हालाँकि भारत में बढ़ती जनसंख्या के साथ इस आध्यात्मिक शहर पर भी प्रदूषण की गंभीर समस्या का खतरा मंडरा रहा है। वाराणसी गंगा नदी के किनारे बसा है और गंगा नदी में दाह संस्कार के परिणामस्वरूप प्रदूषण के खतरे का स्तर लगातार बना हुआ है। इस प्रकार गंगा नदी के साथ-साथ इसके

***Corresponding Author:** डॉ. निशा राज़दान

आस-पास के घाटों को बचाने और साफ करने की एक बड़ी चुनौती सामने आई है। वाराणसी में गंगा की सफाई की परियोजना इस दिशा में एक नई शुरुआत है जिसमें उचित तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। भारत की इस सांस्कृतिक विरासत को प्रदूषण से बचाने की बहुत ही जरूरत है।

डेविड अर्नोल्ड (2016) इतिहास विभाग, वारविक विश्वविद्यालय, कोवेंट्री, यूके के शोध पत्र 'बर्निंग इश्युज: क्रिमीनेशन एण्ड इंसिनेरेशन इन मार्डन इंडिया' के अनुसार पश्चिम में, जहाँ दाह-संस्कार के लिए औद्योगिक डिजाइन लाई जा चुका है वहाँ भारत में अभी भी परम्परागत मॉडल को ही अपनाया जाता है। भले ही खुली हवा में दाह-संस्कार की पद्धति को अक्सर नैतिक रूप से संदिग्ध और तकनीकी रूप से दोषपूर्ण माना जाता है। इसके विपरीत भारत के सभ्य एवं अन्य समाज का लगाव एक ऐसे संस्कार और प्रक्रिया से था, जिसका यूरोप से कोई लेना-देना नहीं था। प्रचलित और पुरातन होने के बजाय, खुली हवा में दाह संस्कार कई भारतीयों के लिए उनकी आधुनिक आस्था और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक है। हालाँकि, पश्चिम में दाह संस्कार के लिए बढ़ते सार्वजनिक और वैज्ञानिक समर्थन ने दाह संस्कार के पुराने स्वरूप को बनाए रखने, आधुनिक शहर परिदृश्य में शामिल करने और अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए संस्थागत और सामाजिक स्थान बनाने में मदद की है। भारत में जहाँ-जहाँ भी वैज्ञानिक दाह-संस्कार को अपनाया गया, वहाँ अक्सर यह एक प्रतिष्ठित संस्कार नहीं था बल्कि अपमानजनक था।

बैज, एस.एस., भोले, ए.ए., और कोकिल, पी.(2023) के शोध पत्र 'डिजाइन एण्ड एनालिसिस आॅफ एनर्जी एफिशिएंट क्रिमीनेशन फोर इको बॉडी बर्निंग' के अनुसार मनुष्य को जीने के लिए बुनियादी जरूरतों की तरह ऊर्जा के उपयोग को भी अनुकूलित करने की आवश्यकता है, क्योंकि गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का तेजी से ह्रास हो रहा है और इसी तरह पर्यावरण का भी क्षरण हो रहा है। मानव जीवन दिन-ब-दिन बदलता जा रहा है। लेकिन हिंदू धर्म में मृत्यु के बाद रीति-रिवाजों के मामले में ऐसा नहीं है, क्योंकि वे मानव शव का अंतिम संस्कार लकड़ी से ही करने में विश्वास रखते हैं। इस दाह संस्कार के लिए 500 किलोग्राम और उससे अधिक लकड़ी की आवश्यकता होती है। लकड़ी की यह आवश्यकता वनों के क्षरण से आती है और परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण होता है, जबकि लकड़ी जलाने से वातावरण में ग्रीनहाउस गैसें उत्सर्जित होती हैं। इससे दाह संस्कार के बाद नदी के पानी में राख के प्रवाह के कारण जल प्रदूषण भी होता है। शवदाह के क्षेत्र में विद्युत शवदाहगृह, गैसीफायर शवदाहगृह, सौर शवदाहगृह आदि जैसे विकास हुए हैं। ये समाधान भारत में इतने लोकप्रिय नहीं हैं क्योंकि यह विकल्प मुखाग्नि और कपालक्रिया जैसे अनुष्ठानों के अवसर प्रदान नहीं करते हैं।

प्रस्तावित इको बॉडी बर्निंग सिस्टम हरित प्रौद्योगिकी से बना है जिसमें अनुकूलित आकार के साथ बेहतर यांत्रिक डिजाइन शामिल है। दाह संस्कार के लिए उपयोग किया जाने वाला ईंधन बायोमास ईंधन है जो उच्च कैलोरी मान और कम लागत वाले कचरे से ऊर्जा बनाता है। पर्यावरण को हरा-भरा बनाने के लिए वायु संचार के लिए ब्लोअर को सौर ऊर्जा की मदद से चलाया जाता है। लकड़ी आधारित शवदाहगृह के लिए यह उन्नत डिज़ाइन मौजूदा दाह-संस्कार प्रणालियों की तुलना में अधिक कुशल है। शव जलने की प्रक्रिया को सरल करने वाली यह पूरी प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल काम करती है, इसलिए इसे इको बॉडी बर्निंग सिस्टम का नाम दिया गया है। शोधार्थियों द्वारा भारत में इको बॉडी बर्निंग सिस्टम का प्रयोग किया गया और पाया गया कि दाह संस्कार के लिए लकड़ी की आवश्यकता को 400 किलोग्राम से घटाकर लगभग 50 किलोग्राम कर सकते है। इस प्रयोग से अवशिष्ट राख की मात्रा भी कम हो जाती है।

शोध रिक्तता

उपलब्ध संदर्भ साहित्य एवं हिन्दुओं की अंत्येष्टि संस्कार से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को वैज्ञानिक प्रक्रिया से स्पष्ट करते है। साथ ही बैज, एस.एस., भोले, ए.ए., और कोकिल, पी. द्वारा हिन्दुओं के अंतिम संस्कार में लकड़ी के कम उपयोग और पर्यावरण बचाव हेतु एक माॅडल भी देते है। अध्ययन में शोध रिक्तता स्पष्ट होती है कि हिन्दू समुदाय द्वारा दाह संस्कार की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अनुसरण कर पर्यावरण सरंक्षण में योगदान दिया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मृत्यु उपरान्त प्रचलित व्यवहारिक अनुष्ठान (अंत्येष्टि संस्कार) में आए आधुनिक परिवर्तनों को जानना।
2. ग्रामीण तथा शहरी परिप्रेक्ष्य में अंत्येष्टि संस्कार की प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक है जिसमें अंत्येष्टि संस्कार की प्रक्रियाओं के परम्परागत स्वरूप का आधुनिक परिवर्तनों के साथ ग्रामीण एवं नगरीय संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र हेतु राजस्थान के उदयपुर शहर के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु लेटिन वर्ग निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। इस पद्धत्ति के आधार पर कुल मिलाकर 160 उत्तरदाताओं को निदर्शन में सम्मिलित किया गया है।

निदर्शन तथा तथ्य संकलन

प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु संरक्षित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। निदर्शन में सम्मिलित अधिकांश इकाइयों के चयन का आधार दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित शोक संदेश के विज्ञापन है जिसमें शहरी क्षेत्र की निदर्शन इकाइयों का प्रतिशत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र की निदर्शन की इकाइयों के चयन का आधार प्राथमिक और प्रत्यक्ष सूचना के स्त्रोत है।

आयु के अनुसार उत्तरदाता

आयु के अनुसार उत्तरदाताओं के विवरण में पाया गया कि 18 से 20 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र से 18 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 13 प्रतिशत उत्तरदाता थे तथा 21 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र से 20 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 24 प्रतिशत उत्तरदाता थे एवं 41 से 60 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र से 28 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 30 प्रतिशत उत्तरदाता थे जबकि 61 वर्ष से अधिक वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र से 35 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 34 प्रतिशत उत्तरदाता थे। अतः यह स्पष्ट हो रहा है कि इस अनुसंधान में 41 वर्ष से अधिक की आयु के उत्तरदाताओं का प्रतिशत अधिक है।

शिक्षा के अनुसार उत्तरदाता

शिक्षा के अनुसार उत्तरदाताओं के बारे में पाया गया कि माध्यमिक शिक्षा प्राप्त ग्रामीण क्षेत्र से 36 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 14 प्रतिशत उत्तरदाता थे तथा उच्च माध्यमिक तक पढ़े हुए ग्रामीण क्षेत्र से 28 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 16 प्रतिशत उत्तरदाता थे एवं स्नातक किए हुए ग्रामीण क्षेत्र से 24 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 30 प्रतिशत उत्तरदाता थे जबकि स्नातकोत्तर किए हुए ग्रामीण क्षेत्र से 13 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 40 प्रतिशत उत्तरदाता थे। उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से बेहतर है।

दाह संस्कार हेतु लकड़ी की उपलब्धता

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी दाह संस्कार हेतु पम्परागत प्रक्रियाएँ अपनाई जा रही है। शहरों में जनता की माँग के अनुसार नगर निगम टाल पर लकड़ियों को सशुल्क लकड़ियाँ उपलब्ध करवायी जाती है। दाह संस्कार हेतु लकड़ियों की उपलब्धता के प्रश्न पर ग्रामीण क्षेत्र से 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि प्रत्येक घर से एक लकड़ी ले जाई जाती हैं तथा सर्वाधिक रूप से शहरी क्षेत्र के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि टाल से लकड़ियाँ उपलब्ध करवाई जाती हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र से 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि दाह संस्कार हेतु सामूहिक निर्णय से छोड़ दिए गए क्षेत्रों से लकड़ियाँ लाई जाती हैं।

दाह संस्कार का धर्मशास्त्रीय महत्व

ग्रामीण क्षेत्र के 100 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 93 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि मृत्यु उपरान्त प्रचलित व्यवहारिक अनुष्ठान का धर्मशास्त्रीय महत्व है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 0 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि मृत्यु उपरान्त प्रचलित व्यवहारिक अनुष्ठान का कोई धर्मशास्त्रीय महत्व नहीं है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार पूर्वजों की अतृप्ति के कारण, परिजनों को होने वाले कष्टों तथा अनिष्ट शक्तियों द्वारा वशीकरण की संभावना हो जाती है। किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसका क्रियाकर्म धर्मशास्त्र में बताए अनुसार पुरोहित से करवाना उचित होता है।

परम्परागत दाह संस्कार का तार्किक आधार

परम्परागत दाह संस्कार के तार्किक आधार के सवाल पर पाया गया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाता परम्परागत दाह संस्कार के तार्किक महत्व को मानते है क्योंकि उनके अनुसार मानव शरीर पंचतत्व का बना हुआ है उसे पंचतत्व में परम्परागत दाह संस्कार के द्वारा ही विलीन कर सकते है। ग्रामीण क्षेत्र के 100 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 78 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि परम्परागत दाह संस्कार का तार्किक आधार है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 0 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 23 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि परम्परागत दाह संस्कार का कोई तार्किक आधार नहीं है।

अंतिम संस्कार की अन्य विधियाँ

अंतिम संस्कार की अन्य विधियों के प्रश्न पर पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र से 81 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने दफनाने के बारे में बताया जिसमें छोटे बच्चों और अनुसूचित जातियों में और नाथ, गिरी, पूरी गौस्वामी में शव को दफनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र से 9 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विद्युत शवदाह के बारे में और ग्रामीण क्षेत्र से 10 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अंतिम संस्कार की अन्य विधियों में गैस शवदाह के बारे में बताया।

विद्युत और गैस शवदाह गृह

आधुनिकता के इस दौर में विद्युत् शवदाह के लिए शव को विद्युत शवदाह गृह ले जाया जाता है, ये शवदाहगृह सरकार के द्वारा पंजीकृत होते हैं। यहां पर एक पूरी तरह से आच्छादित दाहन गृह होता है और एक तरफ दरवाजा रहता है जिस तरफ से शव को दहन गृह में फिसल पट्टी के माध्यम से ले जाया जाता है और उस विद्युत् शवदाह कक्ष के दरवाजे को बंद कर दिया जाता है। उसके पश्चात् आग की एक तेज़ लहर विद्युत् के माध्यम से पैदा करके शव को जलाया जाता है और बचे हुए अवशेष को दूसरे द्वार से एक नली के माध्यम से निकाला जाता है जो की एक राख के रूप में होता है जिसका उपयोग अस्थि विसर्जन में किया जाता है।

गैस दाह संस्कार में गैस के माध्यम से शव का दहन किया जाता है और गैस श्मशान को एक या दो श्मशान भट्टियों के लिए बनाया जाता है। शरीर का अंतिम संस्कार करने के लिए गैस शवदाहगृह का तापमान 600-1200 डिग्री होता गैस श्मशान में एक शव का अंतिम संस्कार करने के लिए औसतन 45 मिनट समय की आवश्यकता होती है। इन दोनों तरीकों से शवदहन करने पर कुछ धार्मिक क्रियाएँ नहीं की जा सकती जैसे कि कपाल क्रिया।

निष्कर्ष

- प्रस्तुत अध्ययन हेतु 18 से 20 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र से 18 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र से 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने भाग लिया।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी दाह संस्कार हेतु पम्परागत प्रक्रियाएँ अपनाई जा रही है। शहरों में जनता की माँग के अनुसार नगर निगम टाल पर लकड़ियों को सशुल्क लकड़ियाँ उपलब्ध करवायी जाती है।
- ग्रामीण क्षेत्र के 100 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 93 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि मृत्यु उपरान्त प्रचलित व्यवहारिक अनुष्ठान का धर्मशास्त्रीय महत्व है अतः किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसका क्रियाकर्म धर्मशास्त्र में बताए अनुसार पुरोहित से करवाना उचित होता है।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाता परम्परागत दाह संस्कार के तार्किक महत्व को मानते है क्योंकि उनके अनुसार मानव शरीर पंचतत्व का बना हुआ है उसे पंचतत्व में परम्परागत दाह संस्कार के द्वारा ही विलीन कर सकते है।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्र उत्तरदाताओं ने दफनाने के बारे में बताया जिसमें छोटे बच्चों और अनुसूचित जातियों में और नाथ, गिरी, पूरी गौस्वामी में शव को दफनाया जाता है। अन्य विधियों में विद्युत शवदाह और गैस शवदाह के बारे में जानकारी रखते हैं।

सुझाव

- हिन्दुओं के अंत्येष्टि संस्कार को पर्यावरण संगत बनाने हेतु धार्मिक शिक्षकों, महंत तथा कर्मकाण्ड करने वाले पंडितों का विधिवत प्रशिक्षण करवा सकते है।
- हिन्दू धर्म के अंत्येष्टि संस्कार से पर्यावरण प्रदूषण होने के वैज्ञानिक तथ्यों को सहजता से स्पष्ट करने की आवश्यकता है।
- नई पीढ़ी का समाजीकरण परम्परागत विधि के साथ-साथ वैज्ञानिक और पर्यावरण संरक्षण की विधियों से कर सकते है।

संदर्भ

1. (N.d.). Researchgate.net. Retrieved September 29, 2023, from https://www.researchgate.net/profile/Sayantani-Mukherjee-Basak2/publication/327673392_Ghats_of_Varanasi-8an_emerging_centre_of_pollution/links/5cd95497299bf14d959162a 9/Ghats-of-Varanasi-an-emerging-centre-of-pollution.pdf
2. Arnold D. Burning issues: Cremation and incineration in modern India. NTM. 2016; 24(4):393–419. https://doi.org/10.1007/s00048-017-0158-7
3. Badge SS, Bhole AA & Kokil P. (n.d.). Design and analysis of energy efficient crematorium for Eco body burning. Archive.org. Retrieved September 29, 2023, from https://web.archive.org/web/20180424003234id_/http://www.ijett.in/index.php/IJETT/article/viewFile/217/147